इतिहास की थरथरी

मु० र० आबिद

समय अपनी तरह बहता हुआ.... पर आज नंगे सर, आँसू बहाता हुआ... देखता है: सूरज भी गहना चुका, काली आँधी भी उठ चुकी... धरती लहुलुहान है, चाँद तारे धरती पर बिखरे पड़े हैं... जगे के लाज दुलारे सर कटाये पड़े हैं... आसमान ख़ून बरसा चुका... संसार ख़ून के आँसू रो रहा...

सन... सन्ना... सन्नाटा... सुनसानी....

सहमा-सहमा समय अपने मन की कसक लिए, सदा की खटक सहे, कुछ आगे बढ़ता ठिठक कर थम सा जाता है... हाये ये भी देखना भाग्य है! यहः-

एक बाज़ार... कभी का उजालों का बसा बसाया... उजाले बसा... आज कालिक पुता, काला कलूटा (बैगन लूटा)... अनजाने धड़के में जमे, किसी बड़े तूफ़ान के धड़के में बेसुध से लोग... गाहक नहीं,... तमाशा देखने वालों की बुलायी हुई उमंडती भीड़... कुछ धीरे-धीरे काना फूसियाँ... कहते हैं: 'किसी का सर कुचला गया है, किसी ने सर उठाया था... वही गिराया गया है।' सुनते हैं: वह कोई अधर्मी उधमी ही रहा होगा!!

उधर इतिहास का बूढ़ा बन्धुवा 'कलाकार'... आँखों पर सदा जैसी पट्टी बन्धी... कानों में रूई ठुसी... दिल दिमाग़ Transplant किये हुए... बदले हुए... मुँह में कड़वी रोटी के सूखे टुकड़े भराये हुए... एक हाथ तोड़ा हुआ... दूसरे हाथ में साम्राज्य का दिया हुआ घिसा पिटा पुराना क़लम लिये... साम्राज्य की बनायी हुई काली काली से... अपना पढ़ाया हुआ, रटा रटाया हुआ सबक़ दुहराने में लगा हुआ... समय को साम्राज्य के रंग में रंगने में जुटा हुआ...

अचानक भीड़ को चीरता हुआ... उधम चौकड़ी मचाता हुआ दल... जीत के गीत गाता हुआ... (पर सब के सब मुँह तो मात खाये लगते हैं... सब पर फिटकार बरसती हुई...)

ख़ुदा ख़ैर करे... भगवान न दिखये बुरा!!!

काले दल का न टूटने वाला ताँता...

उसी बीच एक ऊँट की नंगी पीठ पर सवार... एक रस्सी में जकड़ी कुछ नंगे-सर बेचादर औरतें और बच्चे बन्दी बने...?? ये कौन?? ये कैसे??... ये क्यों??

तमाश देखने (बुलायी गयी) आयी भीड़ की आँखें धरती में गड़ती हुई...

फिर बन्दियों के ऊँट के आस-पास कुछ कटे सर नैज़ों पर चढ़े... ये तो अरबी लगते हैं!... कितने ही कूफ़े वाले... अपने जाने पहचाने चेहरे...

नहीं. नहीं!! ये तो बड़े खरे सत्यवादी... धर्मात्मा, सच्चे धर्म वाले... भले मनुष्य, सज्जन... (ये अधर्मी कहाँ के! ये उधमी कहाँ के...) घोर अन्धेर हो गया... क़यामत न आ जाए तो कम!

इसी बीच अचानक एक ज़ोर का धमाका Big Bang... (क्या Big Bang कुछ और सिरजन करना चाहता है??...)

एक बन्दी बीबी...के फटकारते हुए दिल भेदी बोल. .. चिड़चिड़ाहट के, उतावले, उबाल के नहीं, बड़े ठहराव के, तीखे बोल... ठेट हिजाज़ की मीठी बोली के नर्म लहजे के बोलः

अल्लाह की, रेत के ज़र्रों के गिनती भर, अर्श (ख़ुदा का सिंहासन/ईशासन) से पाताल के भार भर, सराहनाएँ मैं उसी की सराहना संस्तुति करती हूँ, उसी को (मन से) मानती हूँ, उस पर भरोसा करती हूँ मैं गवाही देती हूँ कि उस एक अकेले अल्लाह, जिसका कोई साथी साझी भागीदार नहीं है, के अलावा कोई भगवान नहीं, और (गवाही देती हूँ कि) मुहम्मद[स०] उसके बन्दे, दास और उसके भेजे रसूल (दूत) हैं। उन पर और उनकी सन्तान पर अल्लाह के वरदान सलवात हो...

[अरे! ये तो मुसलमान हैं... हमारे प्यारे रसूल का ही कलमा पढ़ने वाले... अल्लाह वाले हैं!]

और उनका बेटा तो फुरात के किनारे बेजुर्म निर्दोष ज़ब्ह (गला काट) कर दिया गया, और ख़ून का बदला भी नहीं लिया गया। ए ख़ुदा मैं तुझ पर झूठ बान्धने से पनाह माँगती हूँ (बचती हूँ)। और फिर उस वचन के ख़िलाफ़ बोलने से पनाह माँगती हूँ जो तूने उनके उत्तराधिकारी अली सुपुत्र अबूतालिब के बारे में उन (रसूल^{स०}) पर उतारा, वह अली^{अ०} जिनका हक़ अधिकार छीन लिया गया, हड़प कर लिया गया और जो बेगुनाह मार डाले गये जैसे कल उनके बेटे की हत्या कर डाली गयी... (कुछ हज़रत अली[अ०] के गुण, चरित्र और उनसे लोगों के बुरे बरताव के बारे में) [हाय ये क्या हो गया!!... अल्लाह के चहीते मुहम्मद[स०] के लाडले बेटे और अली[अ०] जैसे धर्मात्मा के प्यारे, दिल के टुकड़े की हत्या?!... आसमान न फट पड़ा!! धरती न धंस गयी!!!]

ए कूफ़े वालो! ए धोखे वालो! उधमियों, उपद्रवियों, अकडू बेवफ़ओं निष्ठाहीनो! हम तो बस अहलेबैत (रसूल मुहम्मद साहब के घर वाले) हैं... हम तो उस (ख़ुदा) के ज्ञान की पेटी हैं, उसकी समझ और उसकी सूझबूझ के पात्र हैं... उसने हमें जग पर खुले बढ़ाया, प्रतीष्ठा दी, फिर भी तुमने (लड़कर) हमारे मार डालने को उचित समझा, हमारे माल को लूट का माल समझा जैसे हम तुर्की या काबुल के दास हों... वैसी ही हमें मारा जैसे हमारे दादा की हत्या की थी, तुम्हारी तलवारों से हम अहलेबैत का ख़ून टपक रहा है यह तुम्हारे पहले से भरे बैर के कारण है। इससे तुम्हारी आँखों को चैन मिला, तुम्हारे दिलों को सुख मिला। तुमने अल्लाह पर झूठ थोपा... तुमने चाल की (छल किया) (पर समझ लो) अल्लाह बड़ा ही अच्छा चलने वाला है... हम पर जो कड़े-कड़े, बड़े-बड़े दुख पड़े वह संसार के बनने से पहले ही ख़ुदा के लिखे में था... (अल्लाह की) धिक्कार, दण्ड और अज़ाब का रास्ता देखो . ..... अब तुम सही रास्ता न देख पाओगे... ए कूफ़े वालों! तुम पर अल्लाह की मार... तुम पर हाय! तुमने हमारे बढ़ावे प्रतिष्ठा पर जलन की: 'हमारे सागर ठाठें मारते हैं और तुम्हारी नदी तुम्हारे खोट के जानवर को छुपा न सके तो इसमें हमारा क्या द्वोष! ये अल्लाह की प्रतिष्ठता है वह जिसे चाहता है प्रदान करता है वह महान प्रतिष्ठा वाला है, अल्लाह जिसे उजाला नहीं देता उसे कहीं उजाला नहीं मिलता!!

फिर तो अन्धेरा ही अन्धेरा... घोर अन्धेर... ये सब तमाशा देखने को बुलाये हुए आये कहाँ फंसे... समय ने उन्हें घेर लिया...

हर तरफ़ आँसू आहें... पिट्टस दुनिया चीख़ उठीः 'बस बस, ए पाक पुनीत लोगों की बेटी... अपने बोल रोक लीजिये, आपने हमारे मन में दुख, कसक की आग भड़का दी है, हमारी गर्दनें झुक गयीं... हमारे सीने भुनने लगे।'

उधर इतिहास के बन्धुवा के हाथों पर कब की कपकपी पड़ चुकी, थरथरी टूट चुकी... हाथ से क़लम छूट चुका... सारा सिखाया पढ़ाया हुआ सबक़ भूल गया... अब समय आगे बढ़ा... **इन्क़ेलाब** लिख गया...

कुछ देखा आपने! यह कौन था? किसके बोल का बल था जिसने इतिहास के चालू हाथ पर लक़वा डाला? किसकी पहल ने बदल डाला इतिहास लेखा? किसके साहस ने इन्क़िलाब की नींव रख डाली?

इतिहास से पूछिये... वही बतायेगा... लाख जग बदले, लाख इतिहास बदले इस धमाके को भूल न पायेगा।

यह फ़ातिमा हैं... इमाम हुसैन[अ०] की बेटी फ़ातिमा (फ़ातिमा बिन्तुल हुसैन[अ०])। आगे न पूछिये। इतिहास को क्या पड़ी, शान्ति वाले नेक शरीफ़ लोगों को देखे। फिर पर्दे वालों को देखना, पर्दा भी ऐसा सूरज तक झलक पाने को तरसे, बाहर की हवा पांव की आहट सूँघने को तरसे। यह तो बेपर्दा किया गया जो इतिहास का सामना हो गया। सामना हुआ तो Big Bang।

यह फ़ातिमा हैं, एक नीव रख दी, अब जनाब ज़ैनब, उम्मे कुलसूम और इमाम ज़ैनुलआबिदीन हैं इसे मज़बूत करने को, वरना, एक अलग-थलग पड़ी छोटी बस्ती में एक बहुत बड़ी सरकारी फ़ौज का एक छोटी सी टोली को कुचल कर हाथ झाड़ लेना कितना आसान था, इमाम हुसैन[अ०] को उनके सन्देश के साथ वहीं तोप देना क्या कठिन था?!

लेकिन यह फ़ातिमा हैं जिन्होंने इतिहास को अपनी सी चलने के पहले चरन में ही उसके सारे किये धरे वहीं धाराशायी कर दिये, गाड़ दिये और हुसैन[अ०] और उनके सन्देश को अमर कर दिया, अनमिट कर दिया। ■■■